IJAER/November-December 2018/Volume-7/Issue-3 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

# काशी का आध्यात्मिक महत्व एवं शिव साधना

**डॉ ममता पांडेय**

एसोसिएट प्रोफ़ेसर प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवम संस्कृति

फ॰अ॰अ॰ गवर्नमेंट पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज महमूदाबाद सीतापुर

**सार:**

यह अध्याय काशी का आध्यात्मिक महत्व एवम शिव साधना से लिया गया है काशी दुनिया के प्राचीनतम नगरों में से है। प्राचीनता के अलावा इसकी विशिष्टता यह है कि इतिहास के इतने लम्बे अन्तराल में नगर के रूप में इसने अपना अस्तित्व बनाए रखा। नगर किसी देश और उसके समाज के विकास के प्रतीक होते हैं। विकसित नगरीय संस्कृति एवं तत्संबंधित अन्य गतिविधियाँ अपने समय और समाज की सभ्यता का मानदंड होती है। परन्तु संस्कृति के इतिहास में इसने अपने महत्व को सदैव बनाए रखा। विविधता में एकता जो भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता है उसका प्रतिनिधित्व यह नगर अपने स्थापन काल से ही करता आ रहा है।

**कीवर्ड:** बनारस, आध्यात्मिक ।

**परिचय**

काशी नगरी वर्तमान वाराणसी शहर में स्थित पौराणिक नगरी है। इसे संसार के सबसे पुरानी नगरों में माना जाता है। भारत की यह जगत्प्रसिद्ध प्राचीन नगरी गंगा के वाम (उत्तर) तट पर उत्तर प्रदेश के दक्षिण–पूर्वी कोने में वरुणा और असी नदियों के गंगासंगमों के बीच बसी हुई है। इस स्थान पर गंगा ने प्रायरू चार मील का दक्षिण से उत्तर की ओर घुमाव लिया है और इसी घुमाव के ऊपर इस नगरी की स्थिति है। इस नगर का प्राचीन श्वाराणसीश नाम लोकोच्चारण से श्बनारसश हो गया था जिसे उत्तर प्रदेश सरकार ने शासकीय रूप से पूर्ववत् श्वाराणसीश कर दिया है।

विश्व के सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद में काशी का उल्लेख मिलता है – श्काशिरित्ते.. आप इवकाशिनासंगृभीतारूश। पुराणों के अनुसार यह आद्य वैष्णव स्थान है। पहले यह भगवान विष्णु (माधव) की पुरी थी। जहां श्रीहरिके आनंदाश्रु गिरे थे, वहां बिंदुसरोवर बन गया और प्रभु यहां बिंधुमाधव के नाम से प्रतिष्ठित हुए। ऐसी एक कथा है कि जब भगवान शंकर ने क्रुद्ध होकर ब्रह्माजी का पांचवां सिर काट दिया, तो वह उनके करतल से चिपक गया। बारह वर्षों तक अनेक तीर्थों में भ्रमण करने पर भी वह सिर उन से अलग नहीं हुआ। किंतु जैसे ही उन्होंने काशी की सीमा में प्रवेश किया, ब्रह्महत्या ने उनका पीछा छोड़ दिया और वह कपाल भी अलग हो गया। जहां यह घटना घटी, वह स्थान कपालमोचन–तीर्थ कहलाया। महादेव को काशी इतनी अच्छी लगी कि उन्होंने इस पावन पुरी को विष्णुजी से अपने नित्य आवास के लिए मांग लिया। तब से काशी उनका निवास–स्थान बन गया।

'काशी' (वाराणसी) और काशी के अधीश्वर विश्वनाथ अनन्त हैं। यह मान्यता एवं सच्चाई है। आधुनिक भू–वैज्ञानिक भी मानते हैं कि काशी विश्व का सबसे पुराना जीवित नगर है। काशी मोक्ष की नगरी है। इसी कारण इसे अविमुक्त क्षेत्र भी कहा जाता है। यह भगवान शिव द्वारा रचित एवं सृष्टि के पूर्व से ही है। यह उल्लेख स्कन्दपुराण के काशी खण्ड में है।

अगस्त्य जी के अनुसार ब्रह्मा की सृष्टि से पूर्व ही काशी की सृष्टि भगवान शिव ने किया। इसी क्षेत्र में शिवा के साथ आनन्दबिहार से इसका नाम 'आनन्दवन' भी है। शिव के प्रकाश से प्रकाशित यह क्षेत्र ज्ञान का भी क्षेत्र है। इसी कारण 'काशी' का अर्थ एवं नाम 'ज्ञान प्रकाशिका' भी है। ज्ञान द्वारा मुक्ति इस क्षेत्र की विशेषता है। कहा जाता है कि भगवान शिव 'तारकमंत्र' का उपदेश कर मृतकों को अपने क्षेत्र में मुक्ति देते हैं। प्रलय काल में शिव काशी को त्रिशूल पर धरती से ऊपर उठाते हैं, जिस कारण महाजलप्रलय में भी काशी का नाश नहीं होता। इसी कारण इसे 'अविनाशी' नगरी एवं शिव के त्रिशूल पर बसी नगरी की संज्ञा दी जाती है।

**काशी (वारानसी) शहर की विशेषता–**

काशी नगरी वर्तमान वाराणसी शहर में स्थित पौराणिक नगरी है। इसे संसार के सबसे पुरानी नगरों में माना जाता है। भारत की यह जगत्प्रसिद्ध प्राचीन नगरी गंगा के वाम (उत्तर) तट पर उत्तर प्रदेश के दक्षिण–पूर्वी कोने में वरुणा और असी नदियों के गंगासंगमों के बीच बसी हुई है। इस स्थान पर गंगा ने प्रायरू चार मील का दक्षिण से उत्तर की ओर घुमाव लिया है और इसी घुमाव के ऊपर इस नगरी की स्थिति है। इस नगर का प्राचीन श्वाराणसीश नाम लोकोच्चारण से श्बनारसश हो गया था जिसे उत्तर प्रदेश सरकार ने शासकीय रूप से पूर्ववत् श्वाराणसीश कर दिया है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का बनारस घराना वाराणसी में ही जन्मा एवं विकसित हुआ है। भारत के कई दार्शनिक, कवि, लेखक, संगीतज्ञ वाराणसी में रहे हैं, जिनमें कबीर, वल्लभाचार्य, रविदास, स्वामी रामानंद, त्रैलंग स्वामी, शिवानन्द गोस्वामी, मुंशी प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पंडित रवि शंकर, गिरिजा देवी, पंडित हरि प्रसाद चौरसिया एवं उस्ताद बिस्मिल्लाह खां आदि कुछ हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने हिन्दू धर्म का परम–पूज्य ग्रंथ रामचरितमानस यहीं लिखा था और गौतम बुद्ध ने अपना प्रथम प्रवचन यहीं निकट ही सारनाथ में दिया था।।

वाराणसी में चार बड़े विश्वविद्यालय स्थित हैंरू बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ हाइयर टिबेटियन स्टडीज और संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय। यहां के निवासी मुख्यतः काशिका भोजपुरी बोलते हैं, जो हिन्दी की ही एक बोली है। वाराणसी को प्रायः श्मंदिरों का शहरश, श्भारत की धार्मिक राजधानीश, श्भगवान शिव की नगरीश, श्दीपों का शहरश, श्ज्ञान नगरीश आदि विशेषणों से संबोधित किया जाता है।

वर्तमान में काशी (वाराणसी):– मध्यकालीन काशी की स्थिति अति चिंतनीय रही। विदेशी हमलावरों तथा धर्मांध शासकों ने मन्दिरों एवं धर्मस्थलों को तोड़ा। ईस्ट इंडिया एवं ब्रिटिश शासन काल में नये धर्मस्थल बने। स्वतन्त्रता के बाद धर्मस्थलों की संख्या में निरंतर विकास हुआ। यह स्थिति पूरे देश में रही। काशी इसका अपवाद नहीं रही। ब्रिटिश काल में प्रिंसप ने बनारस पर पुस्तक लिखी। प्रिंसप ने लगभग एक हजार मंदिरों का बनारस (काशी) में उल्लेख किया है। यही संख्या 1868 में 1654 हो गयी। इस प्रकार काशी में मंदिरों का विकास जारी रहा। वर्तमान में यह संख्या कई हजार हो चुकी है।

मध्ययुगीन भक्ति आन्दोलन के दौरान कुछ नये आध्यात्मि केन्द्रों का विकास हुआ। इनमें स्वामी रामानन्द की तपस्थली, पंचगंगा घाट, संतकबीर की जन्मस्थली लहरतारा एवं तपस्थली कबीरचौरा को प्रतिष्ठा मिली। संतरविदास जन्मस्थल एवं तपस्थल सीरगोवर्धन की पीठ भी स्थापित हुई। वैष्णव संत लोटादासजी की तपस्थली लोटाटीला (ईश्वरगंगी) के साथ–साथ संत कीनाराम की कर्मस्थली एवं अघोरपीठ कीं कुण्ड अध्यात्मिकता के नये केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध हुआ। स्वामी करपात्री जी द्वारा स्थापित धर्मसंघ (दुर्गाकुंड) धर्मजागरण का मुख्य केन्द्र है। महामना मालवीय जी की प्रेरणा से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में बना विश्वनाथ मंदिर अपनी विशालता, कलाकृति के कारण आस्था एवं आकर्ष का केन्द्र है। गोस्वामी तुलसीदास ने श्रीरामचरितमानस की रचना साथ ही एवं अन्य ग्रन्थों के लिए काशी को अपना स्थान बनाया। गोस्वामी तुलसीदास का निवास स्थल अस्सीघाट था। इसलिए वर्तमान में अस्सीघाट की प्रसिद्धि गोस्वामी तुलसीदास से भी जुड़ी। गोस्वामी तुलसीदास के आराध्य बनकटी हनुमान एवं संकटमोचन वर्तमान में आस्था के प्रमुख केन्द्र है। काशी की रथयात्रा का प्रारम्भ भी इसी दौरान हुआ। गोस्वामी तुलसीदास के काल से प्रारम्भ श्रीरामलीला का विस्तार पूरे काशी नगर में है। परम्परागत ढ़ंग से होने वाली विश्वप्रसिद्ध रामनगर की रामलीला आधुनिक कालखंड का विकास है। इसी

कड़ी में रामनगर की रासलीला भी है। मध्यकालीन धर्मान्धता के बाद ब्रिटिश भारत में रियासतों एवं हिन्दू समाज के सहयोग से प्रारम्भ आयोजनों में रामनगर की रासलीला एवं रामलीला प्रमुख है। विशुद्धानन्द, गोपीनाथ कविराज एवं योगानन्द काशी की विभूति रहे।

समय के विकास के साथ–साथ स्वतन्त्र भारत में भी अनेक समारोहों एवं पीठों का विकास हुआ। गायत्री शक्तिपीठ (नगवा), मानसमन्दिर एवं त्रिदेवमंदिर (दुर्गाकुण्ड) नवविकसित केन्द्रों में प्रमुख हैं। श्रावण महीने में मानसमन्दिर का मेला काशी की विरासत में सम्मिलित हुआ। इसी प्रकार इस्कान का दुर्गाकुण्ड स्थित केन्द्र श्रीकृष्ण भक्ति के मुख्य केन्द्र के रूप में वर्तमान में अपनी यात्रा में है। प्रजापिता ब्रह्मकुमारी अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय केन्द्र पूरे नगर में हैं, यद्यपि इसका काशी का केन्द्र सारनाथ में है। स्वामीनारायण पंथ का मुख्य मंदिर काशी में मछोदरी पर है। इस प्रकार हमें यह ज्ञात होता है कि अतीत से वर्तमान तक की यात्रा में भारत ही नहीं पूरे विश्व में काशी (वाराणसी) आज भी आकर्षण का केन्द्र है। काशी के इस आकर्षण की चर्चा में शिव की काशी के बाद वेदव्यास द्वारा स्थापित व्यासकाशी का भी विवरण महत्वपूर्ण है। गंगापार स्थित व्यासकाशी व्यास तपस्थली– वेदव्यास की कर्मस्थली के रूप में विख्यात है। चूंकि वेदव्यास अमर हैं। इस कारण आज भी वेदव्यास की निवासस्थली व्यासकाशी ही है। भगवान शिव के द्वारा त्रिपुरासुर पर विजय के स्मृति दिवस अवसर पर काशी में कार्तिक पुर्णिमा के दिन देवदीपावली की अनादिकालीन परम्परा है। यह नये रूप में बीसवीं शताब्दी (1990) के दशक में प्रारम्भ हुई। आज यह भारत ही नहीं विश्व के सबसे बड़े दीप उत्सव के रूप में बदल गयी है। काशी के पौराणिक 84 घाटों के अलावा नवनिर्मित गंगा घाटों पर प्रतिवर्ष कार्तिक महीने की पूर्णिमा को सूर्यास्त के समय (सांयकाल) एक घंटे के अन्दर करोड़ों दीप काशी के सभी घाटों पर एक साथ जलते हैं। यह दीप महोत्सव कई किलोमीटर में फैले सभी गंगा घाटों पर एक साथ सम्पन्न होता है। काशी (वाराणसी) गंगा के दूसरे किनारे से देवदीपावली की छटा काशी के गंगाघाटों पर देखने से यही लगता है कि मानों पृथ्वी पर द्वितिया का चांद बड़े प्रकाश के साथ धरती पर उतरा है। इस दीपमाला की छटा मां गंगा की लहरों को और भी आकर्षक बनाती है। जिसे देख कर यही लगता है कि दीप प्रकाश से प्रकाशित घाट एवं मां गंगा एककार हो गये हैं। यह काशी का बीसवीं शताब्दी का प्रमुख एवं आकर्षक विश्वप्रसिद्ध मेला है। देवदीपावली के इस मेले से परम्परा को नवीन जीवन मिला। देवदीपावली देखने के लिए विश्व के कोने–कोने से दर्शनार्थी आते हैं। इस दिन के लिए होटलों, बजड़ों एवं नावों की अग्रिम बुकिंग, महीनों पहले ही हो जाती है। गंगा घाटों के अलावा काशी के सभी कुंड़ों तीर्थों पर भी उसी समय दीप जलते हैं और पूरी काशी अलौकिक प्रकाश से जुड़ जाती है।

## काशी विश्वनाथ मंदिर का आध्यात्मिक इतिहास

शक्तिशाली गंगा के पश्चिमी तट पर स्थित, भगवान शिव को समर्पित काशी विश्वनाथ मंदिर देश के सबसे महत्वपूर्ण मंदिरों में से एक है। यहाँ, भगवान शिव को ब्रह्मांड के भगवान के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। असंख्य प्राचीन मंदिरों और महान आध्यात्मिक इतिहास के स्मारकों में, काशी मंदिर, जिसमें पीठासीन देवता के रूप में एक ज्योतिर्लिंग (भगवान शिव) है, का विशेष उल्लेख मिलता है।

शक्तिशाली गंगा के पश्चिमी तट पर स्थित, काशी, जिसे बनारस या वाराणसी के नाम से भी जाना जाता है, को आध्यात्मिकता या भारत की आध्यात्मिक राजधानी के रूप में जाना जाता है।

दिलचस्प बात यह है कि भगवान शिव, जो अपनी ताकत साबित करने के लिए एक उग्र स्तंभ के रूप में प्रकट हुए, ने पृथ्वी की सतह को विभाजित किया और आकाश तक चमक गए। इस गतिशील प्रकाश का एक खंड ज्योतिर्लिंगम में बारह अलग–अलग स्थलों में प्रकट हुआ। और काशी उनमें से एक है।

यहाँ, भगवान शिव को विश्वनाथ या ब्रह्मांड के भगवान और विश्वेश्वर (विश्व ईश्वर), ब्रह्मांड के देवता के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। और प्रकाश की यह असीम किरण भगवान शिव की अनंत प्रकृति और उनकी शक्ति का प्रतीक है।

इसके अलावा, काशी को विश्व स्तर पर सबसे पुराना जीवित शहर माना जाता है! भव्य मंदिर के अलावा, निकटवर्ती दशाहवामेधा घाट पर आयोजित गंगा आरती हजारों आगंतुकों को आकर्षित करती है। और यही बात शहर के अन्य मंदिरों और घाटों पर भी लागू होती है जो अपने आध्यात्मिक झुकाव के लिए जाने जाते हैं।

वर्तमान मंदिर का निर्माण 1780 में इंदौर की रानी अहिल्या बाई होल्कर द्वारा किया गया था, और इससे पहले, कई शासकों ने उस संरचना के पुनर्निर्माण का प्रयास किया था जिसे आक्रमणकारियों द्वारा लगातार विनाश का सामना करना पड़ा था। और यह इस तथ्य को स्थापित करता है कि मंदिर कई सदियों से अस्तित्व में है लेकिन कई हमलों और पुनरुत्थान को देखा है।

वर्तमान मंदिर संरचना के बारे में कहा जाता है कि इसमें तीन गुंबद हैं, जिनमें से दो महाराजा रणजीत सिंह द्वारा दान किए गए सोने से ढके हैं, जो कभी पंजाब पर शासन करते थे। दिलचस्प बात यह है कि एक प्राचीन कुआं, जिसे ज्ञान वापी (ज्ञान का कुआं) के नाम से जाना जाता है, लंबे अतीत की कहानी बयां करता है। मान्यता से पता चलता है कि काशी विश्वनाथ की मूर्ति को आक्रमणकारियों से बचाने के लिए इस कुएं में छिपाया गया था।

लेकिन यह मंदिर इतना महत्वपूर्ण क्यों है? दिलचस्प बात यह है कि भगवान शिव को अक्सर रचनात्मक विध्वंसक के रूप में जाना जाता है और उन्हें कालातीतता और मृत्यु से जोड़ा जाता है। इसलिए, जन्म, जीवन और मृत्यु के दुष्चक्र से मुक्ति पाने वाले भक्त, काशी के पवित्र शहर की यात्रा करते हैं और पृथ्वी पर अपनी यात्रा समाप्त होने के बाद, भगवान के स्वर्गीय निवास कैलाश में शरण लेते हैं।

इसके अलावा, पारंपरिक मान्यता बताती है कि भगवान शिव के दूत अपने भक्तों को उनकी अंतिम यात्रा के दौरान ले जाते हैं। इसलिए, यहाँ, काशी में, शिव गण भक्तों को उनकी यात्रा समाप्त करने में सहायता करते हैं, न कि यम (मृत्यु के देवता) के एजेंट। लोककथाओं से यह भी संकेत मिलता है कि भगवान शिव उन लोगों के कानों में मोक्ष मंत्र का जाप करते हैं जो काशी जाते हैं और अपना शेष जीवन मुक्ति पाने के लिए वहीं बिताते हैं।

इसके अलावा, यह एक पवित्र हिंदू तीर्थ स्थल है। इस तथ्य को आदि शंकराचार्य, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, बामाख्यापा, गोस्वामी तुलसीदास और आध्यात्मिक शक्तियों वाले कई अन्य पुरुषों और महिलाओं जैसे महान व्यक्तियों द्वारा बार–बार स्थापित किया गया है। अंतिम लेकिन कम से कम, इस ज्योतिर्लिंग मंदिर की यात्रा को बाकी ग्यारह स्थलों की यात्रा के बराबर कहा जाता है।

संक्षेप में, काशी विश्वनाथ मंदिर भारत के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों का प्रतीक है और इसलिए इसे सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। और कई प्राचीन स्मारकों से युक्त काशी विश्वनाथ कॉरिडोर के उद्घाटन के साथ, आज दिन के दौरान, इस मंदिर का महत्व कई गुना बढ़ने की उम्मीद है।

काशी (वाराणसी) के शिवलिंगः– भगवान शिव काशी में लिंग रूप में पूजित हैं। भगवान शिव के दो रूप हैं। एक है सकल (साकार) तथा दूसरा है अकल (निष्कल/निराकार)। लिंग शिव का निराकार रूप तथा मूर्ति (समस्त अंग एवं आकार सहित) सकल रूप में पूजित होते हैं। भगवान शिव की पूजा उक्त दोनों रूपों में होती है। यह विवरण शिवपुराण में है। वैसे तो काशी के कण–कण में शंकर का वास है। लेकिन पुराणों के अनुसार पांच प्रकार के शिवलिंगों का उल्लेख है।

1. स्वयम्भू शिवलिंग (स्वतः पृथ्वी से प्रकट),
2. देवताओं द्वारा स्थापित शिवलिंग,
3. ऋषियों द्वारा स्थापित शिवलिंग,
4. शिवभक्तों द्वारा स्थापित शिवलिंग एवं
5. अन्य शैव तीर्थों के प्रतीक शिवलिंग।

काशीखण्ड में 511 शिवलिंगों का वर्णन है। इसमें 12 स्वयम्भू शिवलिंग (ओंकारेश्वर सहित), 46 देवताओं द्वारा स्थापित, 47 ऋषियों द्वारा प्रतिष्ठित, 07 ग्रहों द्वारा पूजित, 40 शिवगणों द्वारा पूजित तथा 295 अन्य शिवलिंग हैं। इसके अतिरिक्त 65 शिवलिंग–शैव तीर्थों के प्रतीक हैं। पंडित कुवेरनाथ सुकुल के अनुसार काशीखण्ड के अतिरिक्त लिंगपुराण में 22 तथा काशी रहस्य में एक और शिवायतन का उल्लेख है। इस प्रकार कुल संख्या 534 होती है। इस संख्या में निरंतर वृद्धि होती रही। प्रिंसेप के समय यह संख्या एक हजार थी। सन् 1868 में इनकी संख्या 1654 थी। वर्तमान में यह संख्या हजारों में है।

काशी के छोटे–बड़े हजारों शिव मंदिरों में सबका दर्शन पूजन सम्भव नहीं है। यदि पौराणिक दृष्टि से भी देखें तोा इनकी संख्या 500 से अधिक है। स्वयंम्भू शिवलिंग पर भी विचार करें तो वह भी संख्या बारह (12) है। किस के दर्शन–पूजन से ही सब की पूजा एवं दर्शन का फल प्राप्त होता है? यह बड़ा प्रश्न है। प्राचीन लिंग पुराण के अनुसार अविमुक्त क्षेत्र के स्वामित्व वाले शिवायतन के शिवलिंग अविमुक्तेश्वर का दर्शन–पूजन सर्वश्रेष्ठ है। यदि मनुष्य के पास मात्र एक शिवलिंग के पूजन का अथवा दर्शन का समय हो तो उसे 'अविमुक्तेश्वर' का ही दर्शन–पूजन करना चाहिए, क्योंकि अविमुक्त क्षेत्र काशी (वाराणसी) के वही स्वामी हैं। अविमुक्तेश्वर अथवा विश्वेसर का दर्शन करने से पुनर्जन्म नहीं होता है।

**बनारस में भगवान शिव के दर्शन**

यह पेपर बनारस के रिक्शा–चालकों के साथ छह सप्ताह के अवलोकन और साक्षात्कार पर आधारित है, जो नियमित रूप से भगवान शिव और अन्य देवताओं (एक 1983य काट्ज 1993) के ष्दर्शन लेनेष् के लिए गंगा के करीब छोटे काशी केदारटेम्पेल में आते थे। मैं इस पेपर को उनके धार्मिक व्यवहार के सिर्फ एक पहलू तक सीमित रखूंगा – जिस तरह से उन्होंने शिव के प्रतीक के साथ नेत्रहीन बातचीत की, काम के घंटों के दौरान शहर में छोटे स्थलों के बाहर और शाम को मंदिर में कुछ मिनटों के लिए रुककर।

मध्य बनारस में प्रदीप होटल के बाहर, मैं दस रिक्शा–चालकों से मिला, जिन्होंने मुझे उनकी दैनिक पूजा में उनका अनुसरण करने, उनके धर्म के बारे में देखने और उनका साक्षात्कार करने की अनुमति दी। उनमें से मैंने उन सात ड्राइवरों का अधिक बारीकी से पालन करना चुना जो नियमित रूप से शाम को गंगा का दौरा करते थे। सभी ड्राइवर बनारस में या उसके बाहर रह रहे थे, सभी के परिवार थे और शादीशुदा थे। उनके दो से छह बच्चे थे। उनमें से पांच अच्छी अंग्रेजी बोलते थे। एक अनुवादक, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) में मनोविज्ञान विभाग का एक छात्र, परियोजना में शामिल हुआ। साक्षात्कार दिन के दौरान किए गए थे – जहां मैं एक या दो का पालन कर सकता था – और शाम को आरती के संबंध में, जहां मैं उन्हें सामूहिक रूप से देख और बात कर सकता था। मैंने बहुत सारे नोट्स लिए। उन्हें बाद में लिखा गया और ड्राइवरों को प्रस्तुत किया गया ताकि वे साक्षात्कार पूरा कर सकें या बदल सकें। (एक पूरी रिपोर्ट में मैं पद्धति संबंधी प्रश्नों, व्याख्यात्मक दृष्टिकोण और अनुभवजन्य निष्कर्षों को और अधिक स्थान दूंगा।)

बनारस शहर के दक्षिणी क्षेत्र में काशीकेदार मंदिर को केदार खंड कहा जाता है। यह एक लंबी पहाड़ी पर पानी के किनारे के ऊपर एक प्रभावशाली घाट के शीर्ष पर स्थित एक नदी मंदिर है। नदी से मंदिर अपनी खड़ी लाल और सफेद धारियों से अलग है, जो मंदिर के प्रबंधन और कई सुबह स्नान करने वालों द्वारा दक्षिण भारतीय हाथ का संकेत देते हैं। गंगा में स्नान करने के बाद, लोग केदारेश्वर की पूजा में चढ़ाए जाने वाले गंगा जल के पीतल के बर्तनों को लेकर मंदिर के नदी के दरवाजे में चौड़ी सीढ़ियाँ चढ़ते हैं। मंदिर के बाहर और दहलीज पर बहुत सारे शिवलिंग हैं। इसके अंदर एक अंधेरा आंतरिक कोर्ट है। इसके चारों ओर कई छोटे–छोटे मंदिर हैं, जिनमें से अधिकांश शिवलिंग हैं। शिव के बैल द्वारा संरक्षित नंदी गर्भगृह है। इस अंधेरे कक्ष के भीतर निहित केदार का लिंग कोई साधारण लिंग नहीं है, बल्कि इसके माध्यम से एक सफेद रेखा के साथ चट्टान की एक गांठ है। परंपरा के अनुसार, यह मानव हाथों द्वारा स्थापित नहीं किया गया था, लेकिन यह भगवान शिव का एक असामान्य, ष्स्वयं प्रकटष् रूप था। इसी मंदिर में मेरे ड्राइवर नियमित रूप से आते

थे, हर दोपहर 20–25 मिनट की पूजा के लिए। वे फूल, पानी और मक्खन लाए और मंदिर के पुजारी से उन्होंने अपना टीका प्राप्त किया।

मेरे मुखबिरों के अनुसार, मंदिर जाने का मुख्य कारण ष्दरसन लेनाष था। उसी अवधारणा का उपयोग उन्होंने किसी साइट या नंदी या लिंगम पर एक ग्राहक की प्रतीक्षा में या दोपहर के आराम के बाद की गई छोटी नजर के लिए किया था। मेरे मुखबिरों के लिए एक सामान्य विषय यह था कि देवता की छवियों को नियमित रूप से और बहुत ही ठोस रूप से देखने का महत्व – या तो कृष्ण, दुर्गा, विष्णु या सरस्वती चित्रों या मूर्तियों के रूप में – मंदिर के गर्भगृह के करीब मौजूद हैं। इसलिए उनके अनुष्ठान का केंद्रीय हिस्सा भगवान की उपस्थिति में खड़ा होना और छवि को अपनी आंखों से देखना था, न केवल देखने के लिए, बल्कि सबसे ऊपर देखने के लिए। मनोवैज्ञानिक रूप से, यह ड्राइवर के लिए एक धार्मिक व्यक्ति के रूप में पुष्टि करने और इस तरह अपनी आध्यात्मिक पहचान को मजबूत करने का एक अवसर प्रतीत होता है। यह पहचान ग्राहकों, दोस्तों, उनके समाज की सामाजिक स्थिति से जुड़ी पारिवारिक भूमिकाओं से संबंधित नहीं है, बल्कि एक ऐसी वास्तविकता से है जो सामान्य जीवन से परे है – बहुत बार श्रद्धा की वस्तु वाराणसी के देवता भगवान शिव और विशेष रूप से काशी केदार मंदिर थे। .

उनकी आंखों के माध्यम से वे परमात्मा का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं और वह आशीर्वाद उनका पीछा करता है, लेकिन उनके दैनिक जीवन में भी प्रबल होता है। जब ड्राइवरों ने काम करना बंद कर दिया, होटल या केंद्र के बाहर इंतजार कर रहे थे, जब उन्होंने कुछ फूल खरीदे या शिव लिंगम पर कुछ पानी डाला, तो वे दर्शन लेने गए।

लेकिन भगवान को देखने के लिए उपासक द्वारा दीक्षित नहीं किया जाता है। इसके बजाय, देवता खुद को अपनी छवि में एक पवित्र धारणा के रूप में देखने के लिए प्रस्तुत करते हैं। ईसाई, यहूदी, मुस्लिम और हिंदू देवताओं जैसी पश्चिमी परंपराओं में कानों के बजाय आंखों के माध्यम से मनुष्य और ईश्वर की बातचीत की प्रमुखता भी हमें इस अनुभव के पारस्परिक चरित्र की याद दिलाती है। देवता को देखने वाला केवल उपासक ही नहीं हैय देवता उपासक को भी देखते हैं। उदाहरण के लिए, किसी देवता की मूर्ति की नई खुली हुई आँखों से जो टकटकी आती है, उसे इतना शक्तिशाली कहा जाता है कि उसे पहले किसी मनभावन प्रसाद पर गिरना चाहिए, जैसे कि मिठाई, या एक दर्पण पर जहाँ वह अपना प्रतिबिंब देख सके। टकटकी शक्ति से भर जाती है।

इस दरसन का अनुभवात्मक भाग स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि ष्आंखों से देखनाष न केवल बोधगम्य है, बल्कि संज्ञानात्मक और स्पर्शनीय मंद भी है।

**उद्देश्य**

1. काशी के आध्यात्मिक महत्व पर अध्ययन।
2. काशी में शिव भक्ति के महत्व पर अध्ययन।

**निष्कर्ष**

काशी दुनिया के प्राचीनतम नगरों में से एक है। यह भारत की सांस्कृतिक राजधानी है। इतिहास में इसका महत्व तो उतना नहीं रहा, परन्तु संस्कृति के इतिहास में इसने अपने महत्व को सदैव बनाए रखा। विविधता में एकता जो भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता है उसका प्रतिनिधित्व यह नगर अपने स्थापन काल से ही करता आ रहा है। एक ही नगर में सम्पूर्ण भारत की सांस्कृतिक, भाषिक, धार्मिक, सांप्रदायिक एवं जनांकिकीय अनेकता और विविधता को परिलक्षित किया जा सकता है। मनुष्य और समाज की संस्कृतियों का एक अटूट सिलसिला यहाँ है।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व के चलते काशी का वास्तविक स्वरूप और इतिहास प्रायः ओझल रहा है। कालान्तर में यह मिथकों का नगर बन गया तथा इसके सन्दर्भ में अनेक मिथक बनते एवं निर्मित होते चले गए। इसके बारे में काशीवासियों का और दुनिया का एक खास बोध रहा है। काशी तीन लोक से न्यारी है, शिव की नगरी है, शिव के त्रिशूल पर बसी है, काशी महाश्मशान है, मणिकर्णिका पर चिता की अग्नि पांच हजार बरस से नित्य जलती है, यह मुक्ति प्रदात्री है आदि धारणाएं इस नगर के संदर्भ में आम हैं। अत्यंत प्राचीन नगर होने के कारण इसमें नवीनता का अंश इतना अधिक जुड़ता चला गया कि उसके जन–जीवन, कुल विन्यास, रूप–रंग साहित्य–संगीत–कला, शिक्षा, पांडित्य जो परिवर्तन हुआ उसका समूचा आकलन असम्भव–सा प्रतीत होता है।

संदर्भ


[1]. लैनॉय आर., (2011), बनारस ए वर्ल्ड इन ए वर्ल्ड, इंडिका बुक्स नोएडा (यूपी), आईएसबीएनरू 81–86569–25–1।

[2]. वेम्बु, एन.आर. (2017), आध्यात्मिक पर्यटन और तीर्थयात्रियों के बीच संतुष्टि की पहचान – एक अनुभवजन्य अध्ययन, आर्थिक अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 14 (4),497–510।

[3]. डेविस, रिचर्ड 2012 हिंदू छवियों के बीच अनुष्ठान स्व की हानि और पुनर्प्राप्ति। जर्नल ऑफ रिचुअल स्टडीज 6रू 93–61।

[4]. हर्टेल, ब्रैडली, एड। और हर्न्स, सिंटिया 2013 लिविंग बनारसरू सांस्कृतिक संदर्भ में हिंदू धर्म। अल्बानीरू स्टेट यूनिवर्सिटी। न्यूयॉर्क प्रेस के।

[5]. Rizutto, Ana& Maria 2019 जीवित परमेश्वर का जन्म। एक मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन। शिकागोरू शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस।

[6]. वुल्फ, डोना मैरी 1982 देवी के मनोविज्ञान के लिए प्रोलेगोमेना। इनरू जॉन स्ट्रैटन हॉले और डोना मैरी वुल्फ (संस्करण), द डिवाइन कंसोटर्रू राधा एंड द गॉडेसेस ऑफ इंडियाय पीपी. 283–297. बर्कलेरू ग्रेजुएट थियोलॉजिकल यूनियन।

[7]. डोडसन, माइकल (सं.) बनारसरू अर्बन फॉर्म्स एंड कल्चरल हिस्ट्रीज। रूटलेज, 2012।

[8]. जायसवाल, विदुला। प्राचीन वाराणसीरू एक पुरातत्व परिप्रेक्ष्य। आर्यन बुक्स इंटरनेशनल, 2009।

[9]. मिशेल, जॉर्ज और राणा पी.बी. सिंह (सं.) बनारसरू द सिटी रिवील्ड। मार्ग प्रकाशन, वॉल्यूम। 57, नहीं। 2 दिसंबर 2015।

[10]. जोनाथन पार्किंसन और ओले मार्क। विकासशील देशों में शहरी तूफान जल प्रबंधन। आईडब्ल्यूए प्रकाशन, 2016।

[11]. नूस, जुर्गन 2012। नर्मदा घाटी में सांस्कृतिक विरासत के नुकसान पर। बर्लिनर इंडोलॉजिस स्टडीयन, वॉल्यूम। 20रू पीपी। 195–248।

[12]. राणा, प्रवीण एस. 2014. तीर्थ पर्यटनरू वाराणसी का एक अध्ययन। एसआरएमई पब्लिशर्स, सागर एमपी।

[13]. सिंह, प्रतिभा 2004। शिव–काशीरू पुराणिक संदर्भ और समकालीन संदर्भ। विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

[14]. सिंह, राणा पी.बी. 2011. वाराणसी, भारत की सांस्कृतिक विरासत शहररू प्रतियोगिता, संरक्षण और योजनाय इन, सिंह, राणा पी.बी. (ईडी।) विरासत और सांस्कृतिक परिदृश्य (ग्रह पृथ्वी और सांस्कृतिक समझ श्रृंखला, प्रकाशन 6)। शुभी पब्लिक्स, नई दिल्लीरू पीपी. 205–254।

[15]. सिंह, राणा पी.बी. और राणा, प्रवीण एस। 2011। भारत के विरासत परिदृश्यरू विरासत पारिस्थितिकी का मूल्यांकनय सिंह, राणा पी.बी. (एड.) हेरिटेजस्केप्स एंड कल्चरल लैंडस्केप्स (प्लैनेट अर्थ एंड कल्चरल अंडरस्टैंडिंग सीरीज, प्रकाशन 6. शुभी पब्लिक्स, नई दिल्लीरू पीपी. 87–128।

[16].सिंह, राणा पी.बी. 2015ए. बनारस, भारत की सांस्कृतिक राजधानीरू विजनिंग कल्चरल हेरिटेज एंड प्लानिंग। SANDHI ए जर्नल ऑफ इंटरफेसिंग साइंस–हेरिटेज एंड टेक्नोलॉजी–ट्रेडिशन ऑफ इंडिया ख्प्ज् खड़गपुर, भारत,, वॉल्यूम। 1 (1), फरवरीरू पीपी। 100–122, और परिशिष्ट पीपी। 124–128।

[17].सिंह, राणा पी.बी. 2015ख. धार्मिक स्थलों और निर्मित आर्कटाइप्स का विरासत मूल्यरू हिंदू धर्म का परिदृश्य, और रिवरफ्रंट वाराणसी का चित्रण। आत्मबोध, जर्नल ऑफ नॉलेज ऑफ सेल्फ, वॉल्यूम। 12 (नंबर 1), स्प्रिंगरू पीपी. 21–40।

[18].सिंह, राणा पी.बी. 2016. भारत में शहरी विरासत और योजनारू बनारस का एक अध्ययनय इन, दत्त, अशोक के., एट अल। (संस्करण।) स्थानिक विविधता और संसाधन और शहरी विकास में गतिशीलता, (वॉल्यूम प्प)। स्प्रिंगर साइंस, डॉर्ड्रेक्ट और न्यूयॉकर्रू पीपी. 423–449।

[19].सिंह, राणा पी.बी. 2017. वाराणसी, भारत की विरासत राजधानीरू पवित्र दृश्यों का मूल्यांकनय इन, त्रिपाठी, अतुल (सं.) बुक ऑफ एब्स्ट्रैक्ट्स, इंटरनेशनल सेमिनार ऑन इंडियन आर्ट हेरिटेज इन ए चेंजिंग वर्ल्डरू चुनौतियां और संभावनाएंरू 27 फरवरी – 01 मार्च 2017, कला इतिहास विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, भारत रू पीपी. 19–38.

[20].सिंह, राणा पी.बी. और राणा, प्रवीण एस. 2017. काशी और ब्रह्मांड, भारतरू पंचक्रोशी यात्रा का तीर्थयात्रा सर्किटय इन, ऑलसेन, डेनियल और ट्रोनो, अन्ना (संस्करण।) धार्मिक तीर्थ मार्ग और ट्रेल्स। CABI ऑक्सफोर्डशायर U-K.